

TYBA कोचिंग सेंटर (TYBA Coaching Center)

राजस्थान CET (12वीं व स्नातक स्तर) दैनिक 6:00 AM मास्टर नोट्स श्रृंखला | Day 4 Release

विषय: भारतीय इतिहास (भाग-1 : स्रोत, काल विभाजन, प्रागैतिहासिक अध्याय 1: इतिहास के स्रोत, पाषाण काल, हड़प्पा नगर नियोजन, एवं सिंधु घाटी सभ्यता)

समाज, अर्थव्यवस्था व पतन

हेल्पलाइन:

6367029449

★ TYBA 6-चरणीय शिक्षण मॉडल: 'कहानी, कब, कहाँ, क्यों, कैसे और सीख'

राजस्थान CET परीक्षा में भारतीय इतिहास के प्राचीन खंड से सिंधु घाटी सभ्यता, नगर नियोजन, प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य और इतिहास के स्रोतों से अनिवार्य रूप से प्रश्न पूछे जाते हैं। इन नोट्स में हड़प्पा से लेकर धोलावीरा तक के प्रत्येक तथ्य को 100% द्विभाषी (समानांतर अंग्रेजी व सरल बोलचाल हिंदी) में 10 पृष्ठों में गहराई से समझाया गया है।

1. इतिहास का अर्थ, स्रोत एवं काल विभाजन (Historiography & Sources)

1.1 पृष्ठभूमि एवं कहानी का सार (The Narrative of Human History)

The Unfolding Saga of Human Civilization: History (derived from the Greek *Historia*, meaning inquiry or knowledge acquired by investigation) is not merely a chronicle of deceased kings and dates; it is the grand epic of human survival, invention, and intellectual awakening. Five thousand years ago, along the fertile floodplains of the Indus and Saraswati rivers, bronze-age Indians engineered planned brick metropolises, underground sewers, international maritime docks, and sophisticated weights and measures when the rest of the world was living in nomadic huts. This chapter explores how archaeology, inscriptions, coins, and ancient strata reconstruct that magnificent past.

मानव सभ्यता की विकास गाथा की कहानी: इतिहास (संस्कृत के 'इति + ह + आस', अर्थात् 'निश्चित रूप से ऐसा ही हुआ था') केवल राजाओं और युद्धों की सूखी तारीखें नहीं है, बल्कि यह मानव के संघर्ष, अविष्कारों और सोचने-समझने की क्षमता के विकास की रोमांचक गाथा है। आज से 5000 साल पहले जब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में लोग कच्ची झोपड़ियों और जंगलों में भटक रहे थे, तब भारत में सिंधु और सरस्वती नदियों के कछार में हमारे पूर्वजों ने पक्की ईंटों के दो मंजिला मकान, भूमिगत नालियां, विशाल स्नानागार, जहाजी गोदी (डॉकयार्ड) और सटीक नाप-तौल की विश्वस्तरीय व्यवस्था खड़ी कर दी थी। इतिहास के स्रोत हमें सिखाते हैं कि उस गौरवशाली अतीत को पुरातात्विक खुदाई, सिक्कों और अभिलेखों से कैसे जीवंत किया जाता है।

1.2 कब हुआ? (Timeline of Indian Prehistory & Historic Divisions)

Three-Fold Broad Periodization of Indian History:

- **Pre-Historic Period (प्रागैतिहासिक काल):** No written records exist; history is reconstructed purely from stone tools, fossil bones, and rock art (Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic). Spans up to ~3000 BCE.
- **Proto-Historic Period (आद्य-ऐतिहासिक काल):** Script and written evidence exist, but remain un-deciphered to this day (Indus Valley Civilization), or written traditions were memorized orally (Vedic Era). Spans ~3000 BCE to 600 BCE.
- **Historic Period (ऐतिहासिक काल):** Clear, decipherable written records and epigraphs exist (commencing from the 6th Century BCE with the Mahajanapadas, Gautama Buddha, and Mauryan inscriptions of Ashoka).

भारतीय इतिहास का त्रिविध काल विभाजन:

- **प्रागैतिहासिक काल (Pre-Historic):** जिस काल का कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है; इतिहास पूरी तरह पत्थरों के औजारों, गुफा चित्रों और जीवाश्मों पर निर्भर है (जैसे पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण काल)।
- **आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto-Historic):** जिस काल की लिखित लिपि तो मिली है लेकिन उसे आज तक कोई पढ़ नहीं सका है (जैसे सिंधु घाटी सभ्यता), अथवा जिसका ज्ञान मौखिक परंपरा में रहा (वैदिक काल)। लगभग 3000 ई.पू. से 600 ई.पू.।
- **ऐतिहासिक काल (Historic):** जिस काल के स्पष्ट और पढ़े जा सकने वाले लिखित साक्ष्य (शिलालेख, साहित्य, सिक्के) मौजूद हैं (छठी शताब्दी ईसा पूर्व / महात्मा बुद्ध और मौर्य काल से अब तक)।

1.3 इतिहास के प्रमुख स्रोत (Sources of Ancient Indian History)

स्रोत का प्रकार (Category)	उप-प्रकार (Sub-types)	प्रमुख ऐतिहासिक उदाहरण एवं परीक्षा उपयोगी तथ्य
पुरातात्विक स्रोत (Archaeological)	अभिलेख (Inscriptions), सिक्के (Coins), स्मारक (Monuments), मृद्भांड (Pottery)	अभिलेख: प्राचीनतम अभिलेख हड़प्पा की मुहरों पर (अपठित); भारत में पढ़े गए सबसे प्राचीन अभिलेख सम्राट अशोक के (ब्राह्मी, खरोष्ठी, आर्मेइक लिपि), जिन्हें 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा। रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (प्रथम संस्कृत अभिलेख), समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति (हरिषेण कृत)। सिक्के (Numismatics): भारत के प्राचीनतम सिक्के आहत सिक्के (Punch-marked coins) कहलाते हैं (चांदी व तांबे के)। भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक) शासकों ने चलाए; सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों (कनिष्क) ने और सर्वाधिक संख्या में सोने के सिक्के गुप्त शासकों ने जारी किए।
साहित्यिक स्रोत (Literary)	धार्मिक साहित्य एवं धर्मनिरपेक्ष / ऐतिहासिक ग्रंथ	धार्मिक: चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद), 108 उपनिषद, 18 पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध त्रिपिटक (सुत्त, विनय, अभिधम्म), जैन आगम ग्रंथ। धर्मनिरपेक्ष / ऐतिहासिक: कौटिल्य का अर्थशास्त्र (मौर्य राजनीति), विशाखदत्त की मुद्राराक्षस, कल्हण की राजतरंगिणी (12वीं सदी - कश्मीर का इतिहास, भारत का प्रथम प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ), बाणभट्ट का हर्षचरित।
विदेशी यात्रियों के विवरण (Foreign Accounts)	यूनानी, चीनी एवं अरबी यात्री	यूनानी: हेरोडोटस ('इतिहास का पिता' - हिस्टोरिका), मेगस्थनीज (चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में - इंडिका), टॉलेमी की जियोग्राफी। चीनी: फाहियान (चंद्रगुप्त द्वितीय के समय - फो-क्यो-की), ह्वेनसांग (हर्षवर्धन के समय - सी-यू-की), इत्सिंग। अरबी: अलबरूनी (महमूद गजनवी के साथ - किताब-उल-हिंद / तहकीक-ए-हिंद), इब्नबतूता (मुहम्मद बिन तुगलक के समय - रेहला)।

2. प्रागैतिहासिक पाषाण काल (Pre-Historic Stone Age in India)

2.1 पाषाण काल के तीन चरण: तुलनात्मक विश्लेषण

चरण (Stage)	कालखंड (Period)	प्रयुक्त औजार एवं तकनीकी (Tools & Tech)	प्रमुख भारतीय स्थल (Key Indian Sites)	मानव जीवन की मुख्य विशेषताएं
1. पुरापाषाण काल (Palaeolithic)	प्रारंभ से ~10,000 ई.पू.	क्वार्टजाइट पत्थर के बेडौल औजार: कुल्हाड़ी (Handaxe), विदारणी (Cleaver), खंदक (Chopper)।	सोहन नदी घाटी (पाकिस्तान), पल्लवरम (मद्रास - रॉबर्ट ब्रूस फुट ने 1863 में पहला हैंडएक्स खोजा), भीमबेटका (म.प्र.)।	शिकारी (आंखेटक) एवं खाद्य संग्राहक। आग की खोज इसी काल में हुई। पशुपालन व कृषि का अभाव।
2. मध्यपाषाण काल (Mesolithic)	~10,000 ई.पू. से ~6000 ई.पू.	सूक्ष्म पाषाण औजार (Microliths): 1 से 8 सेमी के छोटे त्रिकोण, चंद्राकार नुकीले पत्थर के औजार।	बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान) और आदमगढ़ (होशंगाबाद, म.प्र.); सराय नाहर राय (उ.प्र.), भीमबेटका (गुफा चित्रकला)।	पशुपालन की शुरुआत (बागोर व आदमगढ़ से प्राचीनतम साक्ष्य)। भीमबेटका (म.प्र.) में यूनेस्को विश्व धरोहर गुफा चित्रकला का विकास।
3. नवपाषाण काल (Neolithic)	~6000 ई.पू. से ~2500 ई.पू.	घिसे हुए और पॉलिशदार पत्थर के कुल्हाड़े, सेल्ट, ओखली-मूसल।	मेहरगढ़ (बलूचिस्तान - कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य) , बुर्जहोम व गुफकराल (कश्मीर - गर्त आवास/गड्ढे के घर), चिरांद (बिहार - हड्डी के औजार)।	पहिए (Wheel) का आविष्कार , विधिवत कृषि की शुरुआत (गेहूं व जौ), स्थायी बस्तियां, मृद्भांड (मिट्टी के बर्तन) निर्माण, कुत्ते को पालतू बनाना (बुर्जहोम में मालिक के साथ दफनाया गया)।

3. सिंधु घाटी सभ्यता: उत्पत्ति, विस्तार एवं नगर योजना (The Indus Civilization)

3.1 पृष्ठभूमि, खोज का इतिहास एवं नामकरण (Discovery & Nomenclature)

Discovery & Chronological Landmarks:

- **First Notice (1826):** Charles Masson visited the ruins of Harappa in Montgomery district (Punjab, Pakistan) and first recorded the existence of an ancient fortified settlement.
- **Railway Construction (1856):** John and William Brunton used ancient baked bricks from Harappa mounds as ballast while laying the Lahore-Multan railway line.
- **Official Discovery (1921-1922):** Under Sir John Marshall (Director General of Archaeological Survey of India - ASI):
 - **Harappa:** Discovered and excavated in 1921 by Rai Bahadur Daya Ram Sahni along the Ravi river.
 - **Mohenjodaro:** Discovered in 1922 by Rakhaladas Banerjee (R.D. Banerjee) along the Indus river in Larkana, Sindh.
- **Naming Conventions:** Initially titled '*Indus Valley Civilization*' (सिंधु घाटी सभ्यता) because earliest sites were grouped along the Indus. Later renamed 'Harappan Civilization' according to international archaeological conventions (named after the type-site first excavated). Also designated the 'Indus-Saraswati Civilization' as over 80% of settlements were discovered along the dried Saraswati-Ghaggar river basin.
- **Carbon-14 Absolute Dating:** Renowned historian D.P. Agrawal analyzed radio-carbon dates establishing the accepted mature chronometric range: 2500 BCE to 1750 BCE.

खोज का इतिहास, नामकरण एवं तिथियां:

- **सर्वप्रथम जानकारी (1826):** चार्ल्स मैसन ने हड़प्पा के टीलों को देखा और पहली बार वहां किसी प्राचीन सभ्यता के होने का संकेत दिया।
- **रेलवे निर्माण (1856):** लाहौर से कराची रेलवे लाइन बिछाते समय ब्रंटन बंधुओं (जॉन व विलियम ब्रंटन) ने हड़प्पा की पक्की ईंटों को ट्रैक पर रोड़ी की तरह बिछा दिया था।
- **विधिवत वैज्ञानिक खोज (1921-1922):** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के महानिदेशक **सर जॉन मार्शल** के निर्देशन में:
 - **हड़प्पा (1921):** दयाराम साहनी ने पंजाब (पाकिस्तान) के मोंटगोमरी (साहीवाल) जिले में रावी नदी के बाएं तट पर उत्खनन किया।
 - **मोहनजोदड़ो (1922):** राखालदास बनर्जी ने सिंध (पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएं तट पर खोजा।
- **नामकरण:** शुरुआत में सिंधु नदी घाटी में मिलने के कारण इसे 'सिंधु घाटी सभ्यता' कहा गया। लेकिन पुरातत्व के अंतरराष्ट्रीय नियम (जिस स्थल की खुदाई सबसे पहले हो, उसी के नाम पर नाम रखा जाता है) के अनुसार इसका सबसे प्रामाणिक नाम '**हड़प्पा सभ्यता**' है। बाद में घग्घर-हकरा घाटी में सर्वाधिक बस्तियां मिलने से इसे 'सिंधु-सरस्वती सभ्यता' भी कहा जाता है। इसे भारत की '**प्रथम कांस्ययुगीन नगरीय क्रांति**' भी कहते हैं।
- **रेडियोकार्बन तिथि (C-14):** सुप्रसिद्ध इतिहासकार डी.पी. अग्रवाल के अनुसार इसकी सबसे प्रामाणिक तिथि **2500 ई.पू. से 1750 ई.पू.** मानी गई है।

3.2 भौगोलिक विस्तार: 13 लाख वर्ग किमी का त्रिकोण (Geographical Extent)

दिशा (Direction)	चरम सीमावर्ती स्थल (Extreme Site)	नदी घाटी (River)	वर्तमान राज्य / देश (Modern Location)
उत्तरतम सीमा (Northernmost)	मांडा (Manda)	चिनाब नदी (Chenab)	अखनूर, जम्मू-कश्मीर
दक्षिणतम सीमा (Southernmost)	दैमाबाद (Daimabad)	प्रवरा नदी (गोदावरी की सहायक)	अहमदनगर, महाराष्ट्र (कांस्य रथ मिला)
पश्चिमिमत सीमा (Westernmost)	सुत्कागेंडोर (Sutkagendor)	दाश्क नदी (Dasht)	बलूचिस्तान, पाकिस्तान (मकरान तट)
पूर्वतम सीमा (Easternmost)	आलमगीरपुर (Alamgirpur)	हिंडन नदी (यमुना की सहायक)	मेरठ, उत्तर प्रदेश

Spatial Geometry & Dimensions: The geographical expanse forms a vast triangular shape covering nearly 13,00,000 square kilometers across three modern nations: India, Pakistan, and Afghanistan (Shortugai and Mundigak in Afghanistan). The North-to-South span is approximately 1,400 km, while the East-to-West distance along the coast extends nearly 1,600 km. It was significantly larger in territorial extent than contemporary Egyptian and Mesopotamian civilizations combined!

विस्तार की आकृति एवं विशालता: यह सभ्यता त्रिभुजाकार (Triangular) आकृति में लगभग 13 लाख वर्ग किलोमीटर के विशाल क्षेत्रफल में फैली थी। यह आधुनिक भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान (अफगानिस्तान में दो स्थल: शोर्तुगई और मुंडीगाक) तक विस्तृत थी। उत्तर से दक्षिण की दूरी लगभग 1400 किमी और पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई लगभग 1600 किमी थी। इसका कुल क्षेत्रफल तत्कालीन मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं के कुल क्षेत्रफल से भी कहीं अधिक विशाल था!

3.3 अद्वितीय नगर योजना एवं स्थापत्य (Master Urban Town Planning)

Hallmarks of Harappan Town Planning:

- **Grid Pattern / Orthogonal Layout:** Streets intersected strictly at right angles (90 degrees), cutting the town into rectangular blocks. Known in architecture as the 'Chessboard Pattern' or 'Gridiron System'. Main avenues ran true North-South and East-West.
- **Bipartite Division (Dual Mounds):**
 - **Western Mound (Citadel / दुर्ग टीला):** Smaller, elevated upon an artificial mud-brick terrace, strongly fortified with defensive walls. Housed public administrative halls, granaries, and the ruling elite.
 - **Eastern Mound (Lower Town / नगर टीला):** Much larger, situated at lower ground levels, housing residences, merchants, and artisan quarters. (Exception: Dholavira is divided into three tiers: Citadel, Middle Town, and Lower Town! Exception: Chanhudaro had no citadel at all!).
- **Burnt Brick Architecture:** Universal utilization of kiln-burnt standardized bricks in exact 4:2:1 ratio (Length: 28 cm, Width: 14 cm, Height: 7 cm). Bricks were joined using mud mortar and gypsum.
- **Advanced Underground Drainage:** Domestic bathrooms and latrines drained through ceramic pipes embedded in house walls into covered masonry drains running beneath main streets. Drains were capped with removable limestone slabs and manholes (inspection chambers) for periodic desilting.
- **House Design & Privacy:** Houses opened into narrow side-lanes rather than bustling main avenues (doors did not face main streets, with the sole exception of Lothal). Zero windows opened directly at ground level, maintaining household acoustic privacy. Courtyard with multi-room perimeter, private wells, and paved bathrooms.

हड़प्पा नगर नियोजन के 5 अद्भुत नियम:

- **ग्रिड पद्धति (शतरंज / ऑक्सफोर्ड सर्कस जाल):** शहर की सड़कें एक-दूसरे को समकोण (90 डिग्री) पर काटती थीं, जिससे पूरा नगर चौकोर खंडों (ब्लॉक्स) में विभाजित हो जाता था। मुख्य सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में सीधी जाती थीं।
- **दोहरे टीलों का विभाजन (दुर्ग एवं निचला नगर):**
 - पश्चिमी टीला (दुर्ग / गढ़ी): छोटा लेकिन ऊंचे चबूतरे पर परकोटे से सुरक्षित। यहाँ शासक वर्ग, प्रशासनिक भवन, अन्न भंडार और धार्मिक स्थल होते थे।
 - पूर्वी टीला (निचला नगर): बड़ा और नीचे धरातल पर, जहाँ सामान्य जनता, व्यापारी और शिल्पकार रहते थे। (अपवाद 1: **धोलावीरा 3 भागों में बंटा था—दुर्ग, मध्यम नगर और निचला नगर!** अपवाद 2: **चन्हूदड़ो में कोई दुर्ग नहीं था, यह पूरी तरह दुर्गविहीन था!**)।
- **मानकीकृत पक्की ईंटें:** घरों के निर्माण में पक्की ईंटों का बहुतायत से प्रयोग हुआ जिनका अनुपात निश्चित **4:2:1 (लंबाई:चौड़ाई:ऊंचाई)** था। ईंटों को जोड़ने के लिए गारे और जिप्सम का प्रयोग होता था।
- **भूमिगत जल निकासी प्रणाली (शानदार नालियाँ):** प्रत्येक घर का गंदा पानी ढकी हुई पक्की नालियों में गिरता था जो मुख्य सड़क के नीचे बहती थीं। नालियों की सफाई के लिए जगह-जगह सोखता गड्ढे और मेनहोल बने थे जिन्हें पत्थरों की पट्टियों से ढका जाता था। ऐसी सफाई व्यवस्था उस समय दुनिया में कहीं नहीं थी।
- **मकानों की खिड़कियां व दरवाजे:** घरों के मुख्य दरवाजे बड़ी सड़कों पर न खुलकर पीछे की गलियों में खुलते थे (अपवाद: **लोथल** में दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलते थे)। घरों के भूतल पर खिड़कियां नहीं होती थीं ताकि गोपनीयता बनी रहे। बीच में खुला आंगन, चारों ओर कमरे, रसोईघर, कुआं और पक्के स्नानागार होते थे।

4. प्रमुख हड़प्पाकालीन नगर एवं विशिष्ट पुरातात्विक साक्ष्य (Major Sites & Findings)

4.1 प्रमुख हड़प्पाकालीन नगरों का संपूर्ण तुलनात्मक चार्ट

नगर (Site)	उत्खननकर्ता व वर्ष	नदी व वर्तमान स्थिति	प्रमुख विशिष्ट पुरातात्विक साक्ष्य (Key Findings for CET)
हड़प्पा (Harappa)	दयाराम साहनी (1921), माधव स्वरूप वत्स (1926), व्हीलर (1946)	रावी नदी (बाएं तट) साहीवाल, पंजाब (पाकिस्तान)	6-6 की दो कतारों में 12 कक्षों वाला विशाल अन्नागार , मजदूरों के 15 बैरक, गेहूं व जौ के दाने, आर-37 (R-37) व एच (H) कब्रिस्तान , शंख का बना बैल, उर्वरता की देवी की मृण्मूर्ति (गर्भ से निकलता पौधा), कांसी का दर्पण, ताबूत शवाधान।
मोहनजोदड़ो (Mohenjodaro) (‘मृतकों का टीला’)	राखालदास बनर्जी (1922), जॉन मार्शल, मैके	सिंधु नदी (दाएं तट) लरकाना, सिंध (पाकिस्तान)	विशाल स्नानागार (Great Bath) - 11.88m x 7.01m x 2.43m (मार्शल ने 'तत्कालीन विश्व का आश्चर्य' कहा), विशाल अन्नागार (Great Granary - मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) , कांस्य नर्तकी की मूर्ति (Dancing Girl - लॉस्ट वैक्स पद्धति) , सेलखड़ी का दाढ़ी वाला साधु/पुजारी, पशुपति शिव की मुहर, सूती कपड़े का टुकड़ा, मलेरिया का प्राचीनतम साक्ष्य।
धोलावीरा (Dholavira)	जे.पी. जोशी (1967-68), आर.एस. बिष्ट (1990-91)	मनहर एवं मनसर नदियां कच्छ का रण, गुजरात (खादिर बेट)	यूनेस्को विश्व धरोहर (2021)। 3 भागों में विभाजित एकमात्र नगर (दुर्ग, मध्य नगर, निचला नगर)। विश्व का सबसे प्राचीन खेल का मैदान (स्टेडियम) , 10 बड़े अक्षरों वाला सूचना पट्ट (Signboard) , अद्भुत 16 विशाल पाषाण जल कुंड (Water Reservoirs) और वर्षा जल संचयन प्रणाली।
लोथल (Lothal)	एस.आर. राव (1954-57)	भोगवा नदी अहमदाबाद, गुजरात	विश्व का प्राचीनतम मानव-निर्मित जहाजी गोदी (Dockyard / बंदरगाह) , चावल (धान) की भूसी का प्रथम साक्ष्य, फारस (ईरान) की खाड़ी की सील/मुहर, युग्म शवाधान (Double Burial - सती प्रथा जैसा साक्ष्य) , शतरंज के बोर्ड जैसे खाने, हाथीदांत का पैमाना (Scale), दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलते थे। 'लघु हड़प्पा' कहलाता है।
कालीबंगा (Kalibangan)	अमलानंद घोष (1952), बी.बी. लाल व बी.के. थापर	घग्घर नदी हनुमानगढ़, राजस्थान	विश्व का प्राचीनतम जुता हुआ खेत (सरसों+चना), 7 अग्निवेदिकाएं, भूकंप का पहला साक्ष्य, लकड़ी की नाली, खोपड़ी की शल्य चिकित्सा, ऊंट की हड्डियां, कच्ची ईंटें ('दीन-हीन बस्ती' व 'तीसरी राजधानी')।
राखीगढ़ी (Rakhigarhi)	अमरेंद्र नाथ (1997-2000), सूरजभान	घग्घर/दृषद्वती नदी हिसार, हरियाणा	भारत में स्थित सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल (नवीनतम शोध अनुसार मोहनजोदड़ो से भी बड़ा)। DNA अध्ययन से सिद्ध हुआ कि हड़प्पावासी स्वदेशी थे। विशाल अन्नागार, कब्रिस्तान, सोने की परखने की कसौटी।
चन्हूदड़ो (Chanhudaro)	एन.जी. मजूमदार (1931), अर्नेस्ट मैके (1935)	सिंधु नदी सिंध (पाकिस्तान)	एकमात्र दुर्गविहीन नगर (No Citadel) । मनके बनाने का कारखाना (Bead-making factory), सौंदर्य प्रसाधन: लिपस्टिक , कंघा, अंजनशलाका (काजल), चार पहियों वाली गाड़ी, कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करते हुए पंजों के निशान।
बनावली (Banawali)	आर.एस. बिष्ट (1973-74)	सरस्वती (रंगोई नदी) फतेहाबाद, हरियाणा	मिट्टी का बना हल (Terracotta Toy Plough) , उत्तम किस्म का जौ, जल निकासी प्रणाली का अभाव, गोल चक्राकार सड़कें।
सुरकोटड़ा (Surkotada)	जे.पी. जोशी (1964)	कच्छ, गुजरात	घोड़े की अस्थियों (Horse Bones) का प्रामाणिक साक्ष्य , तराजू का पलड़ा, अनोखी 'अंडाकार कब्र' (Pot Burial)।

5. सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जीवन एवं पतन (Society, Economy, Religion & Decline)

5.1 सामाजिक संरचना एवं खान-पान

Social Fabric & Daily Life: Society was predominantly matriarchal (मातृसत्तात्मक), inferred from thousands of terracotta female figurines (Mother Goddess). Class division existed functionally rather than by birth (scholars, warriors/rulers, merchants, and manual laborers). Men and women wore two garments: an upper shawl and a lower wrap (Dhoti-like), made of cotton and wool (Greeks called Indian cotton *Sindon*, derived from Sindh). Ornaments were worn by both genders (necklaces, fillets, armlets, bangles). Meat, fish, wheat, barley, dates, and milk formed the staple diet.

सामाजिक व्यवस्था एवं वेशभूषा: मातृदेवी की अनगिनत मूर्तियों से पता चलता है कि समाज संभवतः मातृसत्तात्मक था। समाज कर्म के आधार पर 4 वर्गों में बंटा था: विद्वान (पुरोहित), योद्धा (दुर्ग रक्षक), व्यापारी, और श्रमजीवी (मजदूर)। स्त्री और पुरुष दोनों सूती और ऊनी वस्त्र पहनते थे (यूनानियों ने भारतीय कपास को 'सिंडन' कहा जो सिंधु शब्द से बना)। दोनों ही आभूषण पहनते थे—कंठहार, भुजबंद, चूड़ियाँ और करधनी। भोजन शाकाहारी और मांसाहारी दोनों था—गेहूँ, जौ, तिल, सरसों, खजूर, भेड़-बकरी का मांस और मछली।

5.2 आर्थिक जीवन: कृषि, शिल्प, व्यापार एवं नाप-तौल

Economy, Trade & Metrology:

- **Agriculture:** Nine crops identified: wheat, barley, mustard, sesame, cotton, dates, melon, pea, and rice (Lothal and Rangpur). Wooden ploughs were utilized (proven by Banawali toy plough and Kalibangan furrows).
- **Metallurgy & Crafts:** Bronze age economy (Bronze = 90% Copper + 10% Tin). Khetri supplied copper; Afghanistan/Central Asia supplied tin and lapis lazuli; Kolar (Karnataka) supplied gold. Iron was completely unknown to Harappans!
- **Maritime & Overland Trade:** Trade flourished via barter (no coined currency). Mesopotamian cuneiform records refer to Indus region as 'Meluhha' (मेलुहा), along with intermediate trade posts 'Dilmun' (Bahrain) and 'Magan' (Oman). Cylindrical Mesopotamian seals found at Mohenjodaro and Persian Gulf seal at Lothal prove international maritime trade.
- **Standard Weights & Measures:** Decimal and binary systems prevailed: 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64... with 16 being the base unit. Weights were made of chert stone in cubical shapes. Ivory scales discovered at Lothal.

कृषि, शिल्प, विदेशी व्यापार और नाप-तौल:

- **कृषि:** 9 मुख्य फसलें उगाई जाती थीं: गेहूँ, जौ, चना, सरसों, तिल, कपास, मटर, तरबूज और चावल (चावल की भूसी लोथल व रंगपुर से मिली)। लकड़ी के हलों का प्रयोग होता था (बनावली से मिट्टी का खिलौना हल मिला)।
- **धातु शिल्प:** यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी (कांसा = तांबा + टिन)। खेतड़ी (राजस्थान) से तांबा, अफगानिस्तान से टिन व लाजवर्द मणि, और दक्षिण भारत (कोलार) से सोना मंगाया जाता था। सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा बिंदु: **हड़प्पावासियों को लोहे का बिल्कुल ज्ञान नहीं था!**
- **विदेशी व्यापार एवं 'मेलुहा':** मेसोपोटामिया (इराक) के सुमेरियाई अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र को 'मेलुहा' कहा गया है। मध्यवर्ती बंदरगाह दिलमुन (बहरीन) और माकन (ओमान) थे। लोथल की फारस की मुहर और कालीबंगा से मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर विदेशी व्यापार के पक्के सबूत हैं। सिक्कों का चलन नहीं था, व्यापार वस्तु-विनिमय (Barter System) पर आधारित था।
- **नाप-तौल प्रणाली:** द्विआधारी (Binary: 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64) और दशमलव प्रणाली। **16 का अनुपात** प्रमुख था। बाट चर्ट पत्थर के घनाकार बने होते थे। लोथल से हाथीदांत का पैमाना मिला।

5.3 धार्मिक विश्वास एवं मुहरें

Religious Iconography & Worship:

- **Pashupati Mahadeva Seal (Proto-Shiva):** Found at Mohenjodaro. A three-faced deity sitting in yogic posture wearing horned headdress. Surrounded by four wild animals: Elephant and Tiger on right,

Rhinoceros and Buffalo on left, with two deer beneath his seat. Sir John Marshall identified him as 'Proto-Shiva'.

- **Nature & Fertility Worship: Veneration of Mother Goddess (fertility), Peepal tree, Humped Bull (most revered sacred animal), and Phallus/Yoni stones. Seven fire altars at Kalibangan and Lothal substantiate fire worship.**
- **No Temple Structures: Despite profound religious piety, not a single temple or public shrine has ever been excavated in the entire Harappan civilization!**

धार्मिक मान्यताएं एवं पशुपतिनाथ की मुहर:

- **पशुपति शिव की मुहर (मोहनजोदड़ो):** तीन मुख वाले योगी की ध्यानमग्न मुद्रा में मूर्ति। इनके सिर पर सींगनुमा मुकुट है। इनके चारों ओर चार पशु हैं: दाईं ओर हाथी और बाघ, बाईं ओर गैंडा और भैंसा, तथा चरणों में दो हिरण बैठे हैं। जॉन मार्शल ने इसे 'आद्य शिव' (Proto-Shiva) कहा।
- **मातृदेवी व प्रकृति पूजा:** धरती माता, पीपल का वृक्ष, कूबड़ वाला नंदी बैल (सर्वाधिक पवित्र पशु) और लिंग-योनि की पूजा होती थी। कालीबंगा व लोथल में अग्निवेदिकाएं मिलीं।
- **मंदिरों का अभाव:** पूरी हड़प्पा सभ्यता में कहीं भी एक भी मंदिर का अवशेष नहीं मिला है। पूजा विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत और प्राकृतिक थी।

5.4 सभ्यता के पतन के कारण (Theories of Decline)

पतन का कारण (Cause of Decline)	प्रतिपादक इतिहासकार / विद्वान (Scholar)	वैज्ञानिक एवं पुरातात्विक तर्क
आर्यों का बाह्य आक्रमण (Aryan Invasion)	सर मोर्टिमर व्हीलर एवं गार्डन चाइल्ड	मोहनजोदड़ो में नरककाल मिलना; ऋग्वेद में इंद्र को 'पुरंदर' (किलों को तोड़ने वाला) कहा जाना। (आधुनिक इतिहासकारों द्वारा अब यह सिद्धांत अमान्य माना गया है)।
भीषण प्राकृतिक बाढ़ (Catastrophic Floods)	मार्शल, मैके एवं एस.आर. राव	मोहनजोदड़ो में गाद की 7 परतें मिलना, जिससे साबित होता है कि नगर 7 बार डूबा और दोबारा बसा।
जलवायु परिवर्तन व सूखा (Climate Change)	ऑरिल स्टीन एवं अमलानंद घोष	घग्घर-सरस्वती नदी का सूख जाना, वर्षा में भारी कमी, और मरुस्थलीकरण का विस्तार।
विवर्तनिक विक्षोभ / भूकंप (Tectonic Shifts)	एम.आर. साहनी, रॉबर्ट रेडक्स एवं बी.बी. लाल	भूगर्भीय हलचल से नदियों का मार्ग बदलना और कालीबंगा में 2600 ई.पू. का भूकंप।
पारिस्थितिक असंतुलन (Ecological Imbalance)	वाल्टर फेयरसर्विस	अत्यधिक चराई, वनों की कटाई और जनसंख्या दबाव से संसाधनों की समाप्ति।

6. परीक्षा विशेषांक एवं RSMSSB CET ट्रेप्स (Smart Exam Revision Nuggets)

★ CET परीक्षा में बार-बार पूछे जाने वाले 5 गोल्डन पॉइंट्स (Must-Remember Points)

1. **लोहे का अभाव:** हड़प्पा सभ्यता के लोग तांबा, कांसा, सोना, चांदी जानते थे लेकिन वे **लोहे (Iron)** से बिल्कुल अपरिचित थे (भारत में लोहे का पहला साक्ष्य 1000 ई.पू. अतरंजीखेड़ा से मिलता है)।
2. **घोड़े का विवाद:** सुरकोटड़ा (गुजरात) से घोड़े की अस्थियां और लोथल से घोड़े की मृण्मूर्ति मिली है, लेकिन सामान्यतः हड़प्पावासी घोड़े के व्यापक उपयोग से परिचित नहीं थे। सर्वाधिक पवित्र पशु **कूबड़ वाला बैल** था।
3. **मंदिरों का अभाव:** मिस्र और मेसोपोटामिया में विशाल मंदिर (जिगुरात) मिले हैं, लेकिन हड़प्पा में **एक भी मंदिर नहीं मिला**।
4. **धोलावीरा के 3 अनोखे रिकॉर्ड:** 1. तीन भागों में विभाजित नगर, 2. 16 विशाल पाषाण जलाशय, 3. दस अक्षरों वाला साइनबोर्ड।
5. **सड़क पर दरवाजे:** केवल **लोथल** में मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलते थे, बाकी सभी नगरों में दरवाजे पीछे गलियों में खुलते थे।

7. वैदिक काल एवं महाजनपद काल (Vedic Era & 16 Mahajanapadas)

7.1 ऋग्वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल का तुलनात्मक विश्लेषण

विश्लेषण बिंदु (Parameter)	ऋग्वैदिक काल (~1500 - 1000 ई.पू.)	उत्तरवैदिक काल (~1000 - 600 ई.पू.)
भौगोलिक क्षेत्र	सप्त-सैधव प्रदेश (सिंधु, सरस्वती व 5 पंजाब नदियां)।	गंगा-यमुना दोआब एवं कुरु-पांचल क्षेत्र।
लोहे का उपयोग	लोहे का पूर्ण अभाव; केवल तांबा (अयस) ज्ञात था।	लोहे की खोज (~1000 ई.पू. अतरंजीखेड़ा, उ.प्र.) ; लोहे को 'श्याम अयस' या 'कृष्ण अयस' कहा गया। कृषि में क्रांति।
सामाजिक व्यवस्था	वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी (ऋग्वेद के 9वें मंडल में ऋषि कहता है: "मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं और मेरी माता चक्की चलाती है")। महिलाओं को उपनयन संस्कार व सभा-समिति का अधिकार था।	वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित एवं कठोर हो गई। 4 वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)। महिलाओं की स्थिति में गिरावट; गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद (वृहदारण्यक उपनिषद्)।
राजनीतिक संगठन	कबीलाई व्यवस्था। प्रमुख जन: भारत जन, पुरु जन। राजा पर नियंत्रण हेतु सभा (वृद्धों की संस्था) और समिति (आम जनसभा) थीं। विदथ सबसे प्राचीन संस्था थी।	विशाल राज्य (राष्ट्र) का उदय। राजा की शक्ति में भारी वृद्धि। राजसूय, अश्वमेध व वाजपेय यज्ञों का प्रचलन। सभा व समिति का महत्व घटा।
प्रमुख देवता	प्राकृतिक शक्तियों के देवता: इंद्र (250 सूक्त - 'पुरंदर', वर्षा व युद्ध के देवता), अग्नि (200 सूक्त - मध्यस्थ देवता), वरुण (ऋतस्य गोपा - नैतिक व्यवस्था के संरक्षक)।	प्रजापति (सृष्टिकर्ता), रुद्र (पशुओं के देवता), और विष्णु (पालनकर्ता) प्रमुख बने। यज्ञों में कर्मकांड, पशु बलि और पुरोहितवाद बढ़ा।

7.2 सोलह महाजनपद एवं उनकी राजधानियां (The 16 Mahajanapadas - 6th Century BCE)

Rise of the Mahajanapadas: In the 6th Century BCE, the agricultural surplus generated by iron ploughshares led to the 'Second Urbanization' in the Gangetic valley. Buddhist text Anguttara Nikaya (अंगुत्तर निकाय) and Jain text Bhagavati Sutra (भगवती सूत्र) provide the canonical list of the 16 Mahajanapadas:

सोलह महाजनपदों का उदय एवं द्वितीय नगरीकरण: 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व में लोहे के फाल और औजारों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई, जिससे गंगा घाटी में 'द्वितीय नगरीय क्रांति' हुई। बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तर निकाय** और जैन ग्रंथ **भगवती सूत्र** में 16 महाजनपदों की प्रामाणिक सूची मिलती है:

महाजनपद (Mahajanapada)	राजधानी (Capital)	वर्तमान भौगोलिक क्षेत्र एवं विशेष ऐतिहासिक तथ्य
1. मगध (Magadha)	गिरिव्रज / राजगृह, बाद में पाटलिपुत्र	पटना एवं गया (बिहार)। सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उभरा। हर्यक वंश (बिंबिसार), शिशुनाग, नंद और मौर्य साम्राज्य।
2. अंग (Anga)	चंपा (मालिनी)	भागलपुर एवं मुंगेर (बिहार)। प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र। बिंबिसार ने जीतकर मगध में मिलाया।
3. काशी (Kashi)	वाराणसी	गंगा एवं वरुणा-असि नदियों के संगम पर। सूती वस्त्र एवं घोड़ों के व्यापार हेतु विख्यात।
4. कोशल (Kosala)	श्रावस्ती / अयोध्या	फैजाबाद व अवध (उ.प्र.)। प्रसिद्ध राजा प्रसेनजित; महात्मा बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए।
5. वज्जि (Vajji)	वैशाली	तिरहुत (बिहार)। 8 कुलों का विश्व का प्रथम गणतंत्र संघ (लिच्छवि गणराज्य)।
6. मल्ल (Malla)	कुशीनगर एवं पावापुरी	देवरिया (उ.प्र.)। गणतंत्र। कुशीनगर में महात्मा बुद्ध को महापरिनिर्वाण और पावापुरी में महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त हुआ।
7. चेदि (Chedi)	सोम्यिवती (शुक्तिमती)	बुंदेलखंड (म.प्र./उ.प्र.)। महाभारत काल में शिशुपाल यहाँ का राजा था।
8. वत्स (Vatsa)	कौशाम्बी	इलाहाबाद (प्रयागराज)। प्रसिद्ध राजा उदयन (भास कृत 'स्वप्नवासवदत्ता')।
9. कुरु (Kuru)	इंद्रप्रस्थ (हस्तिनापुर)	मेरठ, दिल्ली, हरियाणा। महाभारत कालीन कौरव-पांडवों की धरती।
10. पांचाल (Panchala)	अहिच्छत्र (उत्तरी) व कांपिल्य (दक्षिणी)	बरेली, बदायूं, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)। द्रोपदी का मूल राज्य।

महाजनपद (Mahajanapada)	राजधानी (Capital)	वर्तमान भौगोलिक क्षेत्र एवं विशेष ऐतिहासिक तथ्य
11. मत्स्य (Matsya)	विराटनगर (बैराठ)	जयपुर, अलवर, भरतपुर (राजस्थान)। पांडवों का अज्ञातवास स्थल।
12. शूरसेन (Surasena)	मथुरा	ब्रज क्षेत्र (उ.प्र.)। भगवान श्रीकृष्ण के यदुवंश से संबंधित।
13. अश्मक (Assaka)	पोटन / पोतली	गोदावरी नदी घाटी (महाराष्ट्र)। दक्षिण भारत में स्थित एकमात्र महाजनपद।
14. अवन्ति (Avanti)	उज्जयिनी (उत्तरी) व माहिष्मती (दक्षिणी)	मालवा (म.प्र.)। शक्तिशाली राजा प्रद्योत (चंडप्रद्योत); बुद्ध कालीन प्रतिद्वंद्वी राज्य।
15. गांधार (Gandhara)	तक्षशिला (Taxila)	रावलपिंडी व पेशावर (पाकिस्तान)। तक्षशिला विश्व का प्राचीनतम विश्वविद्यालय केंद्र था (चाणक्य के शिक्षक होने का स्थल)।
16. कंबोज (Kamboja)	हाटक / राजपुर	कश्मीर व हिंदूकुश (अफगानिस्तान)। उत्तम नस्ल के अरबी/मध्य एशियाई घोड़ों के लिए विख्यात।

8. जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म (Jainism & Buddhism Summary)

Comparative Spiritual Revolution of 6th Century BCE:

- **Jainism:** 24 Tirthankaras. 1st was Rishabhdev (Adinath). 23rd was Parshvanath (gave 4 vows: Satya, Ahimsa, Asteya, Aparigraha). 24th was Vardhamana Mahavira (born 540 BCE at Kundagram, Vaishali; Jnatrika Kshatriya clan), who added 5th vow: Brahmacharya. Attained Kevalya (omniscience) at Jimbhikagram under a Sal tree. Passed away at Pavapuri. Core philosophy: *Triratna* (Samyak Darshan, Samyak Gyan, Samyak Charitra), absolute non-violence (Ahimsa Paramo Dharma), and Syadvada (Anekantavada - theory of relativity of truth). Two sects: Digambara and Svetambara.
- **Buddhism:** Founded by Siddhartha Gautama (The Buddha - 'Light of Asia'), born 563 BCE at Lumbini (Nepal) in Shakya Kshatriya clan. Renounced home at age 29 (Mahabhinishkramana). Attained Enlightenment at age 35 at Bodh Gaya under a Peepal tree (Bodhi Vriksha) on Vaishakh Purnima. Delivered First Sermon at Sarnath (Dharmachakrapravartana). Attained Mahaparinirvana at age 80 (483 BCE) at Kushinagar. Four Noble Truths (Dukkha, Samudaya, Nirodha, Magga) and the Eightfold Path (Ashtangika Marga - The Middle Path / Madhyama Pratipada). Three Jewels: Buddha, Dhamma, Sangha. Two sects: Hinayana and Mahayana.

जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म: दार्शनिक क्रांति का सार:

- **जैन धर्म:** कुल 24 तीर्थंकर। प्रथम: ऋषभदेव (आदिनाथ)। 23वें: पार्श्वनाथ (4 महाव्रत दिए: सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह)। 24वें तीर्थंकर: **भगवान महावीर स्वामी** (जन्म: 540 ई.पू. कुंडग्राम, वैशाली; ज्ञातृकुल), जिन्होंने 5वां महाव्रत '**ब्रह्मचर्य**' जोड़ा। 42 वर्ष की आयु में जम्बिकग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर शाल वृक्ष के नीचे कैवल्य (सर्वोच्च ज्ञान) प्राप्त हुआ। पावापुरी में निर्वाण हुआ। मुख्य सिद्धांत: **त्रिरत्न** (सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र), कठोर अहिंसा, और **स्याद्वाद / अनेकांतवाद** (सत्य के सापेक्षता का सिद्धांत)। दो प्रमुख संप्रदाय: दिगंबर और श्वेतांबर।
- **बौद्ध धर्म:** संस्थापक: **गौतम बुद्ध ('एशिया का ज्योतिपुंज' / Light of Asia)**। जन्म: 563 ई.पू. लुम्बिनी (कपिलवस्तु, नेपाल) में शाक्य क्षत्रिय कुल में। 29 वर्ष की आयु में गृहत्याग (**महाभिनिष्क्रमण**)। 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा को बोधगया में निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ। सारनाथ में 5 शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया (**धर्मचक्रप्रवर्तन**)। 483 ई.पू. में 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ। **चार आर्य सत्य** (दुःख, दुःख समुदय, दुःख निरोध, दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा) और **अष्टांगिक मार्ग (मध्यम प्रतिपदा / Middle Path)**। त्रिरत्न: बुद्ध, धम्म और संघ। प्रमुख संप्रदाय: हीनयान और महायान।

8.1 चारों बौद्ध संगीतियों का मास्टर चार्ट (Four Buddhist Councils)

संगीति (Council)	समय व स्थान	शासक (King) एवं वंश	अध्यक्ष (President)	प्रमुख ऐतिहासिक निर्णय व ग्रंथ संकलन
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई.पू. सप्तपर्णी गुफा, राजगृह	अजातशत्रु (हर्यक वंश)	महाकस्सप	आनंद द्वारा सुत्तपिटक (बुद्ध के उपदेश) तथा उपाली द्वारा विनयपिटक (बौद्ध संघ के नियम) का संकलन हुआ।
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई.पू. वैशाली	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	सबाकामी (सर्वकामनी)	बौद्ध भिक्षुओं में मतभेद के कारण संघ का प्रथम विभाजन: स्थविर एवं महासांघिक में हुआ।
तृतीय बौद्ध संगीति	250 ई.पू. पाटलिपुत्र	सम्राट अशोक (मौर्य वंश)	मोगलिपुत्त तिस्स	तृतीय पिटक अभिधम्मपिटक (दार्शनिक व्याख्या) जोड़ा गया; त्रिपिटक पूर्ण हुआ। विदेशों में धर्म प्रचारक भेजे गए।
चतुर्थ बौद्ध संगीति	प्रथम शताब्दी ई. कुंडलवन, कश्मीर	कनिष्क (कुषाण वंश)	अध्यक्ष: वसुमित्र उपाध्यक्ष: अश्वघोष	बौद्ध धर्म का दो स्पष्ट संप्रदायों में स्थायी विभाजन हुआ: हीनयान एवं महायान । भाषा संस्कृत बनी।